ईसा की पहली सदी में पश्चिम एशिया में एक नये धर्म का उदय हुआ और यहीं से यह धर्म भारत पहुंचा था। इसके जनक ईसा मसीह थे। ईसा के जन्म को आधार मानकर तिथि की गणना की जाती है। ईसा के जन्म के पहले की घटनाओं को ईसा पूर्व में और उसके बाद की घटनाओं को ईसवीं सन् लिखा जाने लगा।

संगम-साहित्य - वैदिक साहित्य का विकास पूर्ववत ही होता रहा किन्तु दक्षिण भारतीय इतिहास में यह अवधि संगम साहित्य के नाम से विशेष लोकप्रिय हुई। दरअसल कभी पहले दक्षिण भारत में तीन कवि परिषदों का आयोजन किया गया, जिसमें तीसरी कवि परिषद् मदुरै (पाण्डय राज्य) में आयोजित की गयी। उसमें कवि, भाट, चारण एकत्र हुए और अपनी रचनाएँ लिखी थी। जिन्हें आठ पुस्तकों में प्रस्तुत किया गया, जो आज भी उपलब्ध है। इसे ही संगम साहित्य कहा जाता है। इन पुस्तकों में दक्षिण भारत में कबीलों के सरदारों और साधारण लोगों के जीवन का वर्णन मिलता है।

विचारों का आदान-प्रदान- इस काल की प्रमुख विशेषता थी- विचारों का अदान-प्रदान। इस काल में भारतीय, विदेशियों के संपर्क में आये, जिससे भारतीय जीवन के विभिन्न पक्षों में धर्म कला एवं विज्ञान से संबंधित न केवल नवीन विचारों का प्रवेश हुआ वरन कई परिवर्तन भी हुए। भारत, ईरान और पश्चिम एशिया के संपर्क में आया साथ ही भारतीय वस्तुएं विदेशों में पहुँचने लगीं, जिससे भारत के तक्षशिला, उज्जैन और मथुरा जैसे नगरों का महत्व अधिक बढ़ गया था।

चैत्य हाल (कार्ले)

कला- इस काल में कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई थी। विशेषकर बौद्ध धर्म के क्षेत्र में सातवाहन राजाओं के शासनकाल में नगरों में रहने वाले व्यापारी और कारीगरों के धनवान होने के कारण उन्होंने बौद्ध विहारों को खुलकर दान दिया जिसका उपयोग चैत्य मण्डपों एवं स्तूपों की सजावट में किया गया तथा नवीन स्तूप बनवाए गए। इन स्तूपों में बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष रखे जाते थे, इसलिए इन्हें पवित्र माना जाता था। भोपाल के पास साँची स्थित है। यहाँ स्तूप की वेदिका (रैलिंग) और तोरणद्वार इसी काल में बनाये गये थे, जो अत्यंत सुंदर है। इसी काल में अमरावती स्तूप बनाया गया, साथ ही तक्षशिला (वर्तमान पाकिस्तान में) और सारनाथ (वाराणसी के निकट) में बौद्ध भिक्षुओं के रहने के लिए विहार बनाये गए। इसी तरह पुणे (महाराष्ट्र) के पास स्थित कार्ले बेदसा एवं भाजा के गुफा विहार इसी काल में बनाए गए थे। इसी अवधि में भारत में विदेशी मूर्ति कला का प्रवेश हुआ। परिणामस्वरूप यहाँ रोमन देवी-देवताओं जैसी मूर्तियाँ भी बनने लगी। इस क्षेत्र में गांधार प्रदेश के भारतीय कलाकारों ने विशेष रुचि लेकर बुद्ध के जीवन से संबंधित अनेक दृश्य पटल यूनानी शैली में बनाए। यह कला शैली 'गांधार कला' के नाम से लोकप्रिय हुई और पंजाब से कश्मीर तक फैल गई। गांधार के कलाकारों के

अतिरिक्त मथुरा के कलाकारों ने बुद्ध की अनेक मूर्तियां बनाई गयी। किन्तु उन्होंने यूनानी शैली की नकल नहीं की इसलिए उनकी शिल्पकला को मथुरा शैली के नाम से संबोधित किया गया।

गांधार शैली की बुद्ध प्रतिमा

इस प्रकार आपने देखा कि ई.पू. 200 से 300 ईस्वी तक के भारत के इतिहास में अनेक राजाओं ने शासन किया जो अलग-अलग वंश के थे। इस अवधि में साहित्य एवं कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई थी।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. शुंग वंश की स्थापना किसने की थी?

ब. सातवाहन राज्य का संस्थापक कौन था?

स. कनिष्क के शासनकाल में चौथी बौद्ध सभा संगीति कहाँ हुई।

द. नाग-वंश का उदय कहाँ हुआ।

य. उत्तर भारत के प्रमुख राजवंश कौन से थे?

र. दक्षिण भारत के राजवंश कौन-कौन से थे।

ल. संगम साहित्य में किसका वर्णन मिलता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. भारत के इतिहास में 200 ई.पू. से 300 ई. तक का काल कैसा माना जाता है?

ब. 200 ई.पू. से 300 ई. तक की कला के बारे में लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. शक वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा ..... था।

ब. मौर्य वंश का अंतिम शासक ..... था।

स. कनिष्क ने ..... में बौद्ध महासभा करवाई थी।

द. सातवाहन वंश का संस्थापक ..... था।

4. जोड़ी बनाइए

अ.	ब.
अ. सातकर्णी	शक
ब. रुद्रदमन	शुंग
स. अग्निमित्र	कुषाण
द. कनिष्क	सातवाहन

पाठ 19

गुप्तकाल एवं उत्तर गुप्तकाल

(300 ई. से 800 ई. तक का भारत)

आइए सीखें

- 300 ई.से. 800 ई. तक के भारत के प्रमुख राजवंश कौन-कौन थे?
- 300 ई. से 800 ई. तक राजनैतिक धार्मिक एवं सामाजिक दशा कैसी थी?

सातवाहन एवं कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात कई राजवंशों का अभ्युदय हुआ। इनमें वाकाटक और मौखरी वंश के अतिरिक्त गुप्तवंश महत्वपूर्ण था। मौर्यों के पतन के पश्चात् नष्ट हो चुकी भारत की राजनीतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः अर्जित किया। इस काल में भारत में आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं कला के क्षेत्र में अपार उन्नति हुई। इस कारण गुप्तकाल को **भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग** कहा जाता है। इस वंश में कई शक्तिशाली राजा हुए, जिसमें चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त एवं स्कन्दगुप्त प्रसिद्ध हैं।

चन्द्रगुप्त प्रथम- गुप्तवंश की स्थापना श्री गुप्त ने की थी। चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध शासक हुआ था। इसने साकेत (अयोध्या) तथा प्रयाग (इलाहाबाद) को जीतकर अपने साम्राज्य को बढ़ाया। इसने लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया और अपने राज्य की सीमाओं में वृद्धि करके चन्द्रगुप्त स्वतंत्र राज्य का स्वामी बन गया था। तब उसे **'महाराजाधिराज'**, अर्थात् राजाओं का राजा कहा जाने लगा था। चन्द्रगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त हुआ।

समुद्रगुप्त- चन्द्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त राज गद्दी पर बैठा। समुद्रगुप्त एक महान विजेता था। उसने उत्तर भारत के 9 शक्तिशाली राजाओं को जीता और उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया। उसके बाद विन्ध्य पर्वत क्षेत्र के 8 गणराज्यों को जीत लिया। फिर समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत के 12 राज्यों पर विजय प्राप्त की बाद में उन राजाओं के राज्य उन्हें वापस लौटा दिए। सीमावर्ती राजाओं ने भी डर कर मित्रता कर ली। इस तरह उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी।

समुद्रगुप्त को भारत के महान राजाओं में गिना जाता है। उसने अच्छी शासन व्यवस्था स्थापित की थी। अपनी प्रजा के प्रति वह बहुत दयावान था। निर्धन, असहाय तथा पीड़ित लोगों की वह सदा सहायता करता था। वह एक बुद्धिमान और कलाप्रिय शासक था। वह स्वयं एक अच्छा कवि था एवं कवियों तथा विद्वानों को आश्रय देता था। गुप्तवंश की वृहत जानकारी इलाहाबाद के किले के स्तम्भ लेख से मिलती है। इसी स्तम्भ पर सम्राट अशोक के विषय में भी लेख अंकित है। गुप्तवंश के सम्राट समुद्रगुप्त की विजयों का इस पर वर्णन है। इसे प्रयागप्रशस्ति कहा जाता है। इस पर खुदे हुए लेख की रचना समुद्रगुप्त के राजकवि हरिषेण ने की थी।

चन्द्रगुप्त द्वितीय- समुद्रगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय विशाल साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना। शकों को परास्त करना इसकी बड़ी सफलता थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने ही 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की तथा उज्जैन नगर को अपनी द्वितीय राजधानी बनाया। इसकी सभा में नवरत्न थे। उसने अपना विवाह नाग राजा की कन्या कुबेर नागा से किया तथा अपनी पुत्री का विवाह वाकाटक वंश के राजकुमार रूद्रसेन से किया। इसने आक्रमण, विवाह-संबंधों के द्वारा अपने साम्राज्य को मजबूत किया। अपने पिता समुद्रगुप्त की तरह चन्द्रगुप्त भी महान विजेता था।

उसने मालवा, गुजरात, सौपारा, पंजाब की सात नदियों के पार का क्षेत्र, अरब सागर तट, बंगाल, असम, हिमालय की तलहटी, दक्षिण में नर्मदा नदी तक साम्राज्य को फैलाया और दृढ़ किया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रसिद्ध **चीनी यात्री फाह्यान** भारत आया था। उसके यात्रा

विवरणों से तथा सिक्के, अभिलेख, ताम्रपत्र आदि से हमें गुप्तकाल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं।

प्रशासनिक व्यवस्था - गुप्तकाल में प्रशासन को सुविधापूर्वक चलाने हेतु साम्राज्य को कई प्रांतों में बांटा गया था। प्रान्तों को जिलों में बांटा गया था। शासन की सबसे छोटी इकाई **ग्राम** थी। इस तरह शासन सुव्यवस्थित था। प्रान्तों का शासन उपरिक महाराज* द्वारा चलाया जाता था। जिलों याने 'विषयों' का प्रशासन विषयपति** चलाते थे। ग्राम प्रशासन की देखभाल ग्रामीणों की मदद से गाँव का मुखिया करता था।

सामाजिक व्यवस्था - गुप्त राजाओं के समय प्रजा सुखी और संपन्न थी। सम्राट न्यायप्रिय होने के कारण प्रजा ईमानदार, कानून को मानने वाली, सहिष्णु तथा प्रगतिशील थी। अधिकांश लोग शाकाहारी थे। समाज जातियों में बँटा हुआ था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि वर्णों की स्थापना हो चुकी थी। इस समय अंतर्जातीय विवाह भी होते थे। अधिकतर जातियाँ आपस में मेल जोल के साथ रहती थीं, परन्तु एक वर्ग ऐसा भी था जिन्हें अछूत समझा जाता था।

व्यापार और व्यवसाय - गुप्तकाल में व्यापार काफी उन्नत था। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दोनों प्रकार के व्यापार होते थे। इस काल में जल तथा थल दोनों मार्गों से व्यवसाय एवं व्यापार होता था। इस समय उज्जैन, मथुरा, कौशाम्बी, विदिशा, बनारस, गया, ताम्रलिप्त, मदुरै आदि प्रमुख व्यापारिक केंद्र थे। दक्षिण-पूर्व एशिया के सुवर्णभूमि, वर्मा, कम्पूचिया आदि देशों के साथ भारत का व्यापार होता था।

व्यापारिक उन्नति के कारण समाज की स्थिति उन्नत अवस्था में थी। चारों तरफ शांतिपूर्ण वातावरण था। इसी कारण गुप्तकाल को **'स्वर्ण युग'** के नाम से भी जाना जाता है।

कला एवं साहित्य का विकास- गुप्तकाल में विविध प्रकार की कलाओं का विकास हुआ। मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, नाट्यकला आदि का विकास हुआ। गुप्तकाल में बड़े पैमाने पर मूर्तियों, मंदिरों, गुफाओं का निर्माण हुआ। जैसे - विदिशा के पास उदयगिरि की गुफाएं, भीतरगांव का मंदिर कानपुर में तथा ललितपुर के पास देवगढ़ के मंदिर तिगवा (कटनी)। इसके साथ-साथ देवी-देवताओं, जैन तीर्थकरों, बुद्ध तथा बोधिसत्वों की अनेकों प्रतिमाएँ भी बनायी गयीं। इसका अर्थ है कि राजा हिन्दू धर्म के साथ ही दूसरे धर्मों का भी आदर करते थे। महरौली (दिल्ली) में स्थित लौह स्तंभ गुप्तकाल की तकनीकी एवं स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है।

सिक्के पर वीणा बजाते हुए समुद्रगुप्त का चित्र इस बात का प्रमाण है कि उस काल में संगीत एवं नृत्य को अधिक प्रोत्साहन दिया गया। सोने तथा चांदी की मुद्राओं का प्रचलन भी गुप्तकाल में हुआ।

सारनाथ की बुद्ध मूर्ति और मथुरा की वर्धमान महावीर की मूर्ति गुप्तकाल की मूर्तिकला के प्रमुख

***उपरिक महाराज** - प्रांत का प्रमुख व्यक्ति

****विषयपति** - जिले का मुखिया

उदाहरण है।

चित्रकला- गुप्तकाल में चित्रकला का विकास चरम सीमा प्राप्त कर चुका था। अजन्ता की गुफाएँ तथा मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाओं का चित्रांकन भी इसी समय हुआ था। अजंता एवं बाघ में पहाड़ियों को काटकर कुछ बुद्ध विहार बनाए गए। गुफाओं की भित्ति पर बौद्ध के जीवन की घटनाओं को भित्तिचित्र के रूप में चित्रित किया गया।

साहित्य एवं विज्ञान- गुप्तकालीन साहित्य के विकास में कालिदास का महान योगदान है। कालिदास संस्कृत के महान विद्वान थे। उन्होंने 'मेघदूत', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', 'रघुवंश' आदि ग्रन्थों की रचना की। आचार्य व्यास, गुप्तकाल के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। कामन्दक ने ''नीतिसार'' नामक अनुपम नीति ग्रंथ लिखा। वराहमिहिर सम्राट विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न के रूप में सुशोभित थे। जो खगोल एवं गणितज्ञ थे।

गुप्तकाल में गणित, पदार्थ विज्ञान, धातुविज्ञान, ज्योतिष विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान की भी अधिक उन्नति हुई। इस काल में गणितज्ञों ने दशमलव पद्धति का प्रयोग किया। आर्यभट्ट ने ज्योतिष और खगोलशास्त्र में प्रमुख योगदान दिया।

धार्मिक जीवन- गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के अनुयायी (विष्णु के उपासक) थे। गुप्तकाल में, शिव, शक्तिदेवी, विष्णु आदि देवताओं की उपासना की गई। इस युग में अश्वमेघ यज्ञ जैसे धार्मिक यज्ञ किये गये। इस काल में महाभारत और रामायण का पुन: लेखन किया गया। संस्कृत भाषा का वर्तमान स्वरूप गुप्तकाल में ही बना। गुप्त सम्राट हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि के देवस्थानों को बिना भेदभाव के उदारता से दान देते थे।

गुप्त साम्राज्य का पतन - कालान्तर में विशाल गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी अपने पूर्वजों की तरह योग्य साबित नहीं हुए। साथ ही हूणों के बार-बार आक्रमण करने से गुप्तकाल का पतन प्रारंभ हो गया। परिणामस्वरूप गुप्त साम्राज्य वाले क्षेत्र में कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ जैसे, मगध के परवर्ती गुप्त नरेश, कन्नौज के मौखरी वंश, पूर्वी भारत (बंगाल) में गौड़ वंश, वल्लभी का मैत्रक राज्य, मालवा का यशोधर्मन, थानेश्वर का पुष्यभूति राज्य, दक्षिण भारत में चालुक्य तथा पल्लव राजवंश प्रमुख थे।

पुष्यभूति वंश का उदय- हरियाणा-दिल्ली के क्षेत्र में पुष्यभूति वंश या वर्धन वंश के राजाओं ने राज्य किया इनमें हर्षवर्द्धन सबसे प्रतापी राजा हुआ था।

हर्षवर्द्धन- हर्ष के पिता का नाम प्रभाकरवर्द्धन था। हर्ष ने हूणों को हराने में अपने बड़े भाई राज्यवर्द्धन की सहायता की। बंगाल के राजा शशांक ने धोखा देकर राज्यवर्द्धन का वध कर दिया। अत: हर्षवर्द्धन को राज्य की जिम्मेदारी उठाना पड़ी। वह 606ई. से सिंहासन पर बैठा। उसने बंगाल के शासक शंशाक से अपने भाई की हत्या का बदला लिया। हर्ष अपने पराक्रम, साहस, चतुराई से भारत को एक सूत्र में बाँधने में सफल हुआ। थानेश्वर उसकी राजधानी थी।

हर्ष के राजकवि बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक 'हर्षचरित' में सम्राट हर्ष के जीवन तथा कार्यों के बारे में लिखा है। चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था। उसने अपने यात्रा विवरण में भारत के कई राज्यों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति के बारे में लिखा है।

साम्राज्य विस्तार - हर्ष ने कन्नौज को राज्य की राजधानी बनाया, जिससे थानेश्वर और कन्नौज राज्य एक हो गये। हर्ष ने पंजाब, पूर्वी राजस्थान, असम और गंगाघाटी के प्रदेशों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया। 620 ई. में पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष की विजय अभियान को नर्मदा नदी के किनारे पर रोक दिया। हर्ष के साम्राज्य में मगध, उड़ीसा, पूर्वी बंगाल, गुजरात, सौराष्ट्र, मालवा तथा सिन्धु प्रदेश सम्मिलित थे। हर्ष ने जिन राजाओं को हराया था वे सभी हर्ष को कर देते थे और युद्ध के समय उसकी

मदद के लिए अपने सैनिक भेजते थे। इस काम के बदले में वे अपने क्षेत्र के राजा बने रहे।

शिक्षण संकेत : हर्षकालीन साम्राज्य विस्तार के संबंध में मानचित्र पर चर्चा कराएँ।

धर्म- हर्ष सूर्य तथा शिव का उपासक था। उसने जीवन के अंतिम वर्षों में बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। वह दूसरे धर्मों का भी पूरा सम्मान करता था तथा उन्हें आश्रय देता था। हर्ष उदार शासक था। वह स्वयं विद्वान था और विद्वानों का आदर करता था।

हर्ष ने कन्नौज में सभी धर्मों का महासम्मेलन करवाया था। हर्ष प्रयाग में हर पांचवे वर्ष धार्मिक सभा का आयोजन कराता था। इस सम्मेलन में ब्राह्मण, धर्माचार्य, बौद्ध, जैन, तपस्वी, यात्री तथा हर्ष के अधीनस्थ सभी राजा आदि भाग लेते थे। हर्षवर्द्धन निर्धनों, अनाथों, अपंगों को दान देता था।

ह्वेनसाँग

ह्वेनसाँग - चीनी यात्री ह्वेनसाँग के यात्रा विवरण इस काल के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक इतिहास जानने का प्रमाणिक साधन है। ह्वेनसाँग मध्य एशिया को पारकर चीन से भारत पहुँचा। उस समय उसकी उम्र मात्र 26 साल थी। अनेक वर्षों तक भारत भ्रमण करके वापस चीन लौट गया। ह्वेनसाँग के अनुसार बौद्ध धर्म पूर्वी भारत में लोकप्रिय था।

नालंदा विश्वविद्यालय- नालंदा (बिहार राज्य) का राजगृह के निकट का एक पुरातात्विक स्थल उस समय देश का प्रमुख विश्वविद्यालय था। भारत और एशिया के अन्य देशों से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन करने आते थे। नालंदा बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था। चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने भी नालंदा की यात्रा की थी।

सामाजिक जीवन- ह्वेनसाँग के यात्रा विवरण के अनुसार हर्ष के शासन में प्रजा संपन्न तथा सुखी थी। अमीर, गरीब सभी लोग धार्मिक सहिष्णुता तथा सौहार्दपूर्वक रहते थे। कुछ लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। लोग गर्ममिजाजी (जिन्हें जल्दी गुस्सा आता है) तथा ईमानदार थे। राज्य में मृत्युदंड नहीं दिया जाता था।

हर्ष का शासन प्रबन्ध - साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी तथा न्यायाधीश राजा होता था। मंत्रिपरिषद् में प्रधानमंत्री, राजपुरोहित, सेनापति, अर्थमंत्री विभागों के प्रमुख मंत्री थे। शासन की सुविधा के लिए साम्राज्य **भुक्तियों** (प्रान्तों), **विषयों** (जिलों) तथा **ग्रामों** में बंटा था। भुक्ति का शासक **उपरिक** (महाराज) कहलाता था। विषय का प्रधान कर्मचारी **विषयपति** तथा ग्राम का प्रधान **ग्रामिक** कहलाता था।

हर्ष प्रजा का बहुत ध्यान रखता था। वह दिन के पहले भाग में प्रशासन संबंधी कार्यों तथा दिन के दूसरे भाग में धार्मिक कार्यों में व्यतीत करता था। ह्वेनसांग के अनुसार- हर्षवर्द्धन ने छठवें धार्मिक समारोह में पाँच वर्ष में एकत्रित धन, दान में दे दिया। सन् 647 में हर्षवर्द्धन की मृत्यु हो गयी। उसका कोई पुत्र नहीं था। अतः योग्य उत्तराधिकारी के अभाव में उसका साम्राज्य नष्ट हो गया।

चालुक्य - दक्षिण भारत में सातवाहन शासकों के पतन के बाद कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय के साथ लगभग इसी समय नवीन चालुक्य वंश का भी उदय हुआ। चालुक्यों की राजधानी वातापी थी। इनके प्रमुख शासक जयसिंह रणराज पुलकेशिन प्रथम, कीर्तिवर्मन, पुलकेशिन द्वितीय थे।

इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक पुलकेशिन द्वितीय था। इसने नर्मदा तट पर हर्षवर्द्धन को पराजित किया। चालुक्य नरेश कला के प्रेमी थे। उनके शासनकाल में कला तथा धर्म की उन्नति हुई। वातापी का मंगलेश का मंदिर, मेंगुती का शिवमंदिर, एहोल का विष्णु मंदिर इस काल की स्थापत्य कला के सुंदर उदाहरण है। चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने ईरान के राजा खुसरो द्वितीय के पास दूतमण्डली भेजी थी।

पल्लव- सातवाहन राज्य के पतन के बाद पल्लव भी अपने अधीन इलाकों के शासक हो गये। इन्होंने अपनी राजधानी काँची (काँचीपुरम) बनायी। महेन्द्रवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन द्वितीय, पल्लव वंश के प्रसिद्ध शासक हुए। नरसिंहवर्मन प्रथम ने चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में पराजित किया। मामल्लपुरम (महाबलीपुरम) के पांच रथ मंदिरों का निर्माण पल्लव नरेशों ने कराया था।

राष्ट्रकूट- दक्षिण भारत में पल्लव, चालुक्यों से राष्ट्रकूट राजाओं के युद्ध होते रहते थे राष्ट्रकूटों ने चालुक्यों को हराकर उनके क्षेत्र को जीत लिया।

तमिल संत- इस काल में नई धार्मिक विचारधारा का जन्म हुआ, जो भक्ति धारा कहलायी। इसमें कारीगर और किसान तथा अनेक जातियों के लोग शामिल थे, जो घूमते हुए विष्णु और शिव की स्तुति में गीत गाते थे। इनमें अलवार, विष्णु के उपासक और नयन्नार, शिव के उपासक थे। ये गीत जनसाधारण की तमिल भाषा में लिखे और गाए गये।

स्थापत्यकला - दक्षिण भारत के राजाओं को मंदिर निर्माण कराने का बड़ा शौक था। महाबलीपुरम् के रथ मंदिरों को पल्लव शासकों ने चट्टानों को काटकर बनवाया। कुछ मंदिर प्रस्तर खंडों से बनाये गये जैसे कांचीपुरम् का मंदिर। मंदिरों का उपयोग सामाजिक और धार्मिक केंद्र के रूप में होता था। मंदिरों के हितों के लिए प्रबंध समिति होती थी।

पारसी धर्म - पुलकेशिन द्वितीय ने ईरान के शासक खुसरो द्वितीय के पास दूतों को भेजा। सौ वर्ष बाद जरथुस्त्रियों ने ईरान को छोड़कर भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर आकार रहने लगे। यही लोग आगे चलकर पारसी कहलाये। इनकी पवित्र पुस्तक का नाम 'जिन्द-ए-अविस्ता' है। पारसी समुदाय के लोगों ने भारतीय व्यापार एवं व्यवसाय में प्रमुख भूमिका निभायी।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए-

(अ) गुप्तवंश के प्रमुख शासकों के नाम लिखिए?

(ब) समुद्रगुप्त ने किन-किन राज्यों को जीता?

(स) गुप्तकाल में साम्राज्य को किन-किन भागों में बांटा गया था?

(द) हर्षवर्धन की विजयों का वर्णन कीजिए।

(य) गुप्तकाल के प्रमुख साहित्यकारों के नाम लिखिए।

(र) चन्द्रगुप्त द्वितीय के द्वारा जीते गए राज्यों के नाम लिखिए?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए-

(अ) गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। समझाइए।

(ब) 300 ई. से 800 ई. तक के राजनैतिक एवं सामाजिक दशा पर प्रकाश डालिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) चन्द्रगुप्त द्वितीय के पिता ..... थे।

(ब) ..... चीनी यात्री था।

(स) मेघदूत के रचियता ..... थे।

(द) मैहरौली में ..... स्थित हैं।

4. जोड़ी बनाइए-

क	ख
कालिदास	ज्योतिषी और खगोलशास्त्री
अभिज्ञान शाकुन्तलम्	चित्रकला
अजन्ता	कालिदास
आर्यभट्ट	नीतिसार
कामन्दक	कवि

5. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(अ) मेघदूत के रचियता थे-

(i) चरक, (ii) वाल्मीकि, (iii)कालिदास, (iv)वात्सायन।

(ब) सूर्य सिद्धान्त का संबंध है।

(i) साहित्य, (ii) गणित, (iii) ज्योतिष, (iv) खगोलशास्त्र।

(स) चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उपाधि धारण की।

(i) रत्न, (ii) देवव्रत, (iii) विक्रमादित्य।

(द) विषयपति, प्रशासक होता था।

(i) ग्राम का, (ii) जिले का, (iii) प्रान्त का।

प्रोजेक्ट कार्य

- गुप्तकाल के साहित्यकारों, गणितज्ञ, ज्योतिषों एवं खगोलशास्त्रियों की सूची बनाइए।
- गुप्तकाल की साहित्यिक कृतियों की सूची बनाइए।
- गुप्तकाल के प्रमुख राजाओं की सूची बनाइए।

पाठ 20

एशियाई देशों के साथ भारत के संबंध

आइए सीखें

- हमारे देश का विश्व से सम्पर्क कितना प्राचीन है?
- भारत से दुनिया ने क्या-क्या सीखा?
- भारत और यूरोप के बीच अरब देश किस तरह सम्पर्क सूत्र का कार्य करते थे?
- रेशम के व्यापार में भारत की क्या भूमिका थी?
- श्रीलंका तथा चीन से हमारे संबंध कितने प्राचीन हैं?
- भारतीय संस्कृति का दक्षिण-पूर्व एशिया में विस्तार।
- विश्व के प्रमुख धर्मों का भारत से संबंध व प्रभाव।

प्राचीन काल से भारतीय सभ्यता व संस्कृति दूर-दूर तक फैल गई थी। साम्राज्य विस्तार के पूर्व ही भारतीय व्यापारी विश्व के अनेक देशों से अपने व्यापारिक संबंध बना चुके थे। इस पाठ में आपको पश्चिमी एशिया, मध्य एशिया तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के साथ भारत के संबंधों की जानकारी प्राप्त होगी।

भारत का पश्चिम देशों से संबंध

हड़प्पा सभ्यता के उत्खनन क्षेत्रों से प्राप्त अनेक वस्तुओं से यह जानकारी मिलती है कि ईसा से कोई 3000 वर्ष पहले भारत तथा मिस्त्र एवं मेसोपोटामिया की सभ्यता के बीच व्यापारिक तथा सांस्कृतिक संबंध थे। ईसा से 600 वर्ष पूर्व पहले से ही भारत के फारस, यूनान तथा रोम से संबंध थे। सिकन्दर के भारत आक्रमण के पश्चात यूनान के साथ संबंध बने। चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी राजदूत मेगस्थनीज था। रोमन इतिहासकार प्लिनी भारतीय वस्तुओं जैसे रेशम, कपास, आभूषण, गरम मसाले आदि के बढ़ते आयात से चिन्तित था। इस प्रकार की वस्तुओं के कारण रोम का बहुत सा धन भारत पहुँचता था। संगम साहित्य में भारत के बाहर से आए हुए लोगों को यवन कहा गया है। रोम निवासियों की एक बस्ती तमिलनाडु के अरिकमेंडु स्थान पर बसी हुई थी।

भारत का अरब देशों से संबंध

अरब देशों और भारत के संबंध अति प्राचीन रहे हैं। अरबों ने भारत से भारतीय अंक पद्धति तथा दशमलव प्रणाली का ज्ञान प्राप्त किया। वे भारतीय अंकों को हिन्दसा कहते थे। अरबों से इस ज्ञान को यूरोपवासियों ने प्राप्त किया। इसीलिए यूरोप में इन अंकों को अरबी अंक कहा जाता था। इस्लाम धर्म के उदय के बाद अरबों ने भारत व यूरोप के बीच जाने वाले स्थल मार्ग पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार वे भारत तथा यूरोप के बीच एक कड़ी बन गये। विज्ञान, गणित, ज्योतिष, औषधि विज्ञान, दर्शन और साहित्य का अध्ययन पहले अरबवासी भारत में करते थे।

भारत का मध्य एशिया से संबंध

पहाड़ी प्रदेश होने के कारण मध्य एशिया के खोतान, कूची, कैराशहर तथा काशगर सहज सम्पर्क में नहीं थे। परन्तु मध्य एशिया के इन नगरों के बीच सांस्कृतिक तथा व्यापारिक संबंध प्राचीनकाल से थे। महाभारत में धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी का उल्लेख मिलता है। गंधार प्रदेश इसी क्षेत्र में विद्यमान था। इसी क्षेत्र को वर्तमान में अफगानिस्तान कहते हैं। गंधार प्रदेश बौद्ध धर्म तथा कला का बहुत बड़ा केंद्र था। बुद्ध की प्राचीनतम प्रतिमाएँ इसी क्षेत्र में बनी। सम्राट अशोक ने अपने धर्म प्रचारकों को मध्य एशिया में भेजा था। उसके दो अभिलेख इस क्षेत्र में मिले हैं।

रूस के दक्षिण भाग में प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रमाण मिले हैं। सुर्खान नदी के तट पर हलचयन तथा उज्बेकिस्तान के दक्षिण में दल्वेर्जिन तोपें उत्खनन में कुषाण काल में कला के विकास तथा उस पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव के बारे में रोचक जानकारियाँ मिली हैं।

भारत का चीन से संबंध

भारत के बौद्ध धर्म का चीन में प्रवेश ह्वान वंश (202 ई.पू. से 600 ई.) के शासन काल में हुआ। भारत और चीन के रास्ते में स्थित खोतान में बौद्ध धर्म का खूब प्रसार हुआ। यहीं से यह धर्म चीन में फैला। चीनियों ने दूसरी शताब्दी ई.पू. से भारत में शिक्षा एवं बौद्ध धर्म का ज्ञान प्राप्त करने हेतु आना प्रारंभ किया। चीनी भाषा में बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद सर्व प्रथम कश्यप मातंग ने किया। जो चीन देश को ई. सन् 56 में गया था। चीन से बौद्ध धर्म सन् 372 ई. में कोरिया में और सन् 538 ई. में जापान में प्रचारित हुआ। अमोघवज्र भारतीय बौद्ध विद्वान था जो आठवीं सदी में चीन गया था। भारत की यात्रा अनेक चीनी विद्वानों ने की। इनमें सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में आने वाला चीनी यात्री फाह्यान (405-411 ई.) छः वर्षों तक भारत में रहा। दूसरा प्रख्यात चीनी यात्री ह्वेनसांग था। ह्वेनसांग सम्राट हर्षवर्धन के शासन काल में भारत आया।

चीन को रेशम उत्पादन की भूमि कहा गया है। यहाँ के रेशमी वस्त्र चिनशुक कहलाते थे। चीन से रेशम का निर्यात रोम तक किया जाता था।

चीन के कारवाँ अपने इस उत्पादन को लेकर जिस मार्ग से गुजरते थे उसे **रेशम मार्ग** कहा जाता था। इसी मार्ग से भारतीय व्यापारी व्यापार करते थे। चीन के बाद भारत का रेशम उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान था।

दक्षिण-पूर्व एशिया के ब्रह्मदेश (म्यांमार), सुवर्णद्वीप (जावा, सुमात्रा तथा बाली), चंपा (वियतनाम) कंबोज (कंबोडिया) आदि भारतीयों से संबंधित थे। आज यद्यपि इनमें से अनेक देश धार्मिक दृष्टि से पूर्णतः बदल गए हैं, परन्तु ये देश कला एवं संस्कृति की दृष्टि से आज भी भारत से जुड़े हैं।

(1) जावा - यह भारत के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। चीनी अभिलेखों के अनुसार यहाँ 800 वर्ष पूर्व भारतीय उपनिवेश की स्थापना हो चुकी थी। यहाँ हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा होती थी। यहाँ निर्मित बोरोबुदूर बौद्ध मंदिर संसार का एक सुन्दर स्तूप माना जाता है।

(2) सुमात्रा- यहाँ तीसरी शताब्दी ईसवी में श्री विजय वंश के द्वारा भारतीय उपनिवेश बसाया गया था। पाँच सौ वर्षों बाद कलिंग प्रदेश से गए शैलेन्द्र वंश के राजा ने इस वंश के शासक को पराजित कर अपने शासन की स्थापना की। ये शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। अन्त में राजेन्द्र चोल ने इसे जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।

यह इण्डोनेशिया का वही द्वीप है, जहाँ 26 दिसम्बर 2004 को भूकम्प आया, जिससे हिन्द महासागर में 'सुनामी' नामक भयंकर लहरें उत्पन्न हुई। इन लहरों से अत्यधिक जान-माल की हानि हुई।

(3) बोर्नियो- पूर्वी द्वीप समूह में यह सबसे बड़ा द्वीप है। पहली शताब्दी में यहाँ भारतीय उपनिवेश की स्थापना हो चुकी थी। पांचवीं शताब्दी में यहाँ के शासक मूलवर्मन का उल्लेख मिलता है। मूलवर्मन हिन्दू

धर्म का अनुयायी था।

(4)कम्बोडिया - वर्तमान में यह द्वीप कम्पूचिया या कम्बोज के नाम से जाना जाता है। यहाँ ईसा की प्रथम शताब्दी में दक्षिण भारत के एक ब्राह्मण कौण्डिन्य ने अपने राज्य की नींव डाली। यह कौण्डिन्य वंश कहलाया। इस वंश के राजाओं ने अंगकोरबाट में एक विशाल मंदिर की स्थापना की। यह मंदिर कला की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट है। इस मंदिर की दीवारों पर रामायण तथा महाभारत के दृश्य अंकित है। यह मंदिर विश्व के प्रसिद्ध स्मारकों में से एक है।

अंगकोरबाट का मंदिर

(5) चम्पा - वर्तमान में यह अनाम कहलाता है। लगभग दूसरी शताब्दी में यहाँ भारतीय राज्य की स्थापना हुई और लगभग 13 सौ वर्षों तक यहाँ भारतीय राज्य रहा।

(6) थाईलैण्ड (श्याम) - श्याम तीसरी से ग्यारहवीं शताब्दी तक हिन्दू शासकों द्वारा शासित रहा। यहां का महान शासक इन्द्रादित्य था। बाद में यह थाई जाति के प्रभुत्व में आ गया। ये लोग बौद्ध धर्म को मानने वाले थे। वर्तमान में यह क्षेत्र थाईलैंड कहलाता है।

(7) म्यांमार (बर्मा) - बर्मा का प्राचीन नाम सुवर्णभूमि था। सम्राट अशोक ने यहाँ बौद्ध धर्म के प्रचारक भेजे थे। आज भी यह बौद्ध धर्म प्रधान देश है। वर्तमान में यह देश म्यांमार के नाम से जाना जाता है।

(8) सिंहल अथवा सिलोन - लंका (वर्तमान में श्रीलंका) से हमारे देश का संबंध पौराणिक काल से है। अयोध्या के राजा राम ने लंका पर विजय प्राप्त की थी। बाद में काठियावाड़ के राजकुमार विजय ने यहाँ भारतीय राज्य की स्थापना की। सम्राट अशोक का पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु यहाँ आए और लंका के राजा तिस्स ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। तब से आज तक लंका बौद्ध धर्म को मानने वाला देश है।

(9) बाली - भारतीय सभ्यता का प्रचार-प्रसार बाली में लगभग सातवी शताब्दी में हुआ। दसवीं शताब्दी में वहाँ के शासक उग्रसेन केसरी का उल्लेख मिलता है। आज भी बाली में भारतीय सभ्यता के चिन्ह मौजूद है।

पाठ में दिए मानचित्र तथा अब तक पढ़े अंशों के माध्यम से नीचे की तालिका को पूरा करो -

क्र.	देश का नाम (वर्तमान)	प्राचीन नाम	दिशा
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			
8.			
9.			
10.			

भारत का विभिन्न देशों से गहरा संबंध रहा यह तुम जान चुके हो। विश्व के महान प्राचीन धर्मों पर भारत का प्रभाव पड़ा है। हमारे देश का सौभाग्य है कि यहाँ हर धर्म के अनुयायी मिलजुलकर निवास करते हैं। पारसी, यहूदी, ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों को भारत में स्थान मिला है। जबकि सनातन (हिन्दू), बौद्ध, जैन व सिक्ख धर्म का उद्‌भव एवं विकास भारत में सबसे पहले हुआ।

यहूदी धर्म

यहूदी हिब्रु लोगों का धर्म था। इस धर्म का संस्थापक अब्राहम था। अब्राहम के पौत्र जैकब को इजराइल के नाम से पुकारा जाता था। इसी के नाम पर इजराइल देश की स्थापना की गयी है। यहूदियों के मंदिर को 'सिनेगांग' कहा जाता है। यहूदियों का विश्वास है कि ईश्वर एक है और केवल उसी की उपासना दिन में दो बार करना चाहिए।

ईसाई धर्म

जेरूसलम के समीप बैथलेहम में ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह का जन्म एक बढ़ई परिवार में हुआ। इनकी माता का नाम मेरी था। 30 वर्ष की अवस्था तक ईसा ने बढ़ई के रुप में नाजेरथ में निवास किया। बाद में उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ईश्वर एक है और प्रेम, मातृत्व तथा करुणा सबसे महत्वपूर्ण है। कुछ लोग ईसा की शिक्षाओं से सहमत नहीं थे। इन लोगों ने ईसा को सलीब पर चढ़ाया। तथापि ईसा मसीह के विचारों का प्रभाव बढ़ता गया और इसने एक धर्म का रूप ले लिया। ईसाई धर्म का सबसे पवित्र चिन्ह सलीब (क्रास) है। ईसाइयों की धार्मिक पुस्तक का नाम 'बाईबल' है। इस धर्म के अनुयायी उन सब पैगंबरों

को मानते हैं जिन्हें यहूदी धर्म के लोग मानते हैं।

इस्लाम धर्म

इस्लाम धर्म का उदय अरब में हुआ। इस धर्म के संस्थापक पैगम्बर हजरत मुहम्मद का जन्म लगभग 570 ई. में मक्का में हुआ। उस समय राजनीतिक दृष्टि से अरब लोग कई कबीलों में बंटे हुए थे। ये अनेक प्रकार के देवी-देवताओं को मानते थे। चालीस वर्ष की उम्र में हजरत मुहम्मद को ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति हुई। आपका संदेश यह था कि ''ईश्वर (अल्लाह) एक है, और वह उसके दूत (पैगम्बर) हैं।'' मक्का निवासियों ने मुहम्मद के इस उपदेश का विरोध किया। इस कारण 622 ई. में मुहम्मद साहब मदीना चले गये। इसी दिन से हिजरी सन् की शुरूआत हुई। मदीना में हजरत मुहम्मद को भारी समर्थन मिला। अपने इन्हीं समर्थकों की मदद से सन् 630 में मक्का पर अधिकार कर लिया।

जिन व्यक्तियों ने हजरत मुहम्मद का संदेश, ''ईश्वर (अल्लाह) एक है, और मुहम्मद उसके दूत (पैगम्बर) हैं।'' मान लिया वे मुस्लिम कहलाए और उनका धर्म इस्लाम कहलाया। इस्लाम धर्म के अनुयायी को पांच बातें मानना जरूरी है (1) कलमा पढ़ना, (2) दिन में पांच बार नमाज पढ़ना, (3) साल में एक माह (रमजान) के रोजे रखना, (4) ज़कात (दान देना), (5) यदि सामर्थ्य हो तो जीवन में एक बार हज करना। कुछ पैगम्बरों के नाम कुरान में दिए गये हैं।

63 वर्ष की अवस्था में हजरत मुहम्मद की मृत्यु 632 ई. में हुई। मुहम्मद साहब के जीवन काल में इस्लाम धर्म को मानने वालों की संख्या में बहुत वृद्धि हो चुकी थी। हजरत मुहम्मद का अपना कोई पुत्र नहीं था। पैगम्बर के उत्तराधिकारी को खलीफा कहते हैं। खलीफाओं के नेतृत्व में इस्लाम धर्म का प्रसार हुआ।

भारत में इस्लाम का आगमन - अरबों ने सन् 712 में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिन्ध के राजा दाहिर पर आक्रमण कर सिन्ध को जीत लिया। यहाँ से इस्लाम का प्रचार-प्रसार भारत के अन्य क्षेत्रों में हुआ। दक्षिण भारत में केरल के तट पर अरब व्यापारी आकर बसने लगे। इन्होंने भी व्यापार के साथ-साथ इस्लाम का प्रचार-प्रसार किया।

पारसी धर्म

पारसियों का मूल देश ईरान है। प्राचीन काल में ईरान फारस या पारस कहलाता था। पारसी इसी देश के मूल निवासी थे। पारसी, आर्य हैं और इनके धर्म की स्थापना **जरथुस्त्र** ने की थी। इनके प्रमुख देवता आहुर और मजदा हैं। जरथुस्त्र के धार्मिक उपदेशों का संग्रह **'जिन्द-ए-अविस्ता'** में मिलता है। भाषाशास्त्रियों के अनुसार यह ग्रंथ भारतीय आर्यों के ऋग्वेद का समकालीन है।